

ISSN No. 2319-5908

Issue-11/Vol-36/March-2023

International English World Scholar's Forum Refereed Quarterly Research Journal

शोध सांदर्श

शोध सांदर्श

SHODH SANDARSH

शिक्षा साहित्य इतिहास कला संस्कृति विज्ञान वाणिज्य आदि

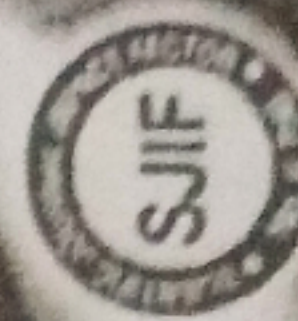
Chief Editor

Prof. (Dr.) V.K. Pandey

Editor

Dr. V.K. Mishra

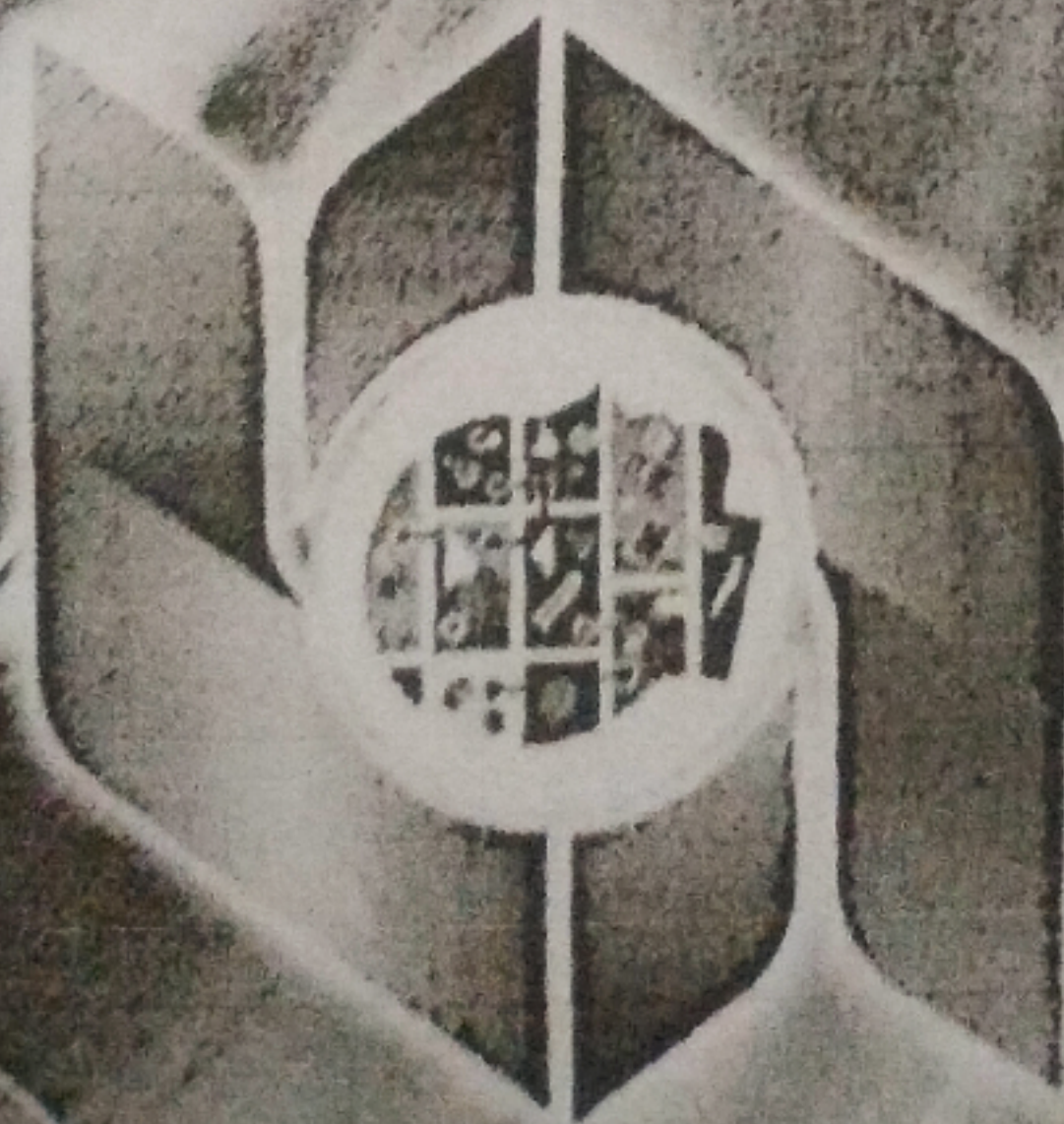
Dr. V.P. Tiwari



विद्यया ह्यनन्तं विज्ञानं - विद्यया च मन्त्रः सर्वविद्यायाः
नव - धर्मो धीमहि - धियो यो नः प्रचोदयात्

Issue-11/Vol-33/March 2023/Peer Reviewed Refereed Quarterly Research Journal

SHODH SANDARSH ISSN No. 2319-5908



शोध सांदर्श



2319-5908 L shodhsandarsh@rediffmail.com

shodhsandarsh@rediffmail.com

shodhsandarsh@rediffmail.com

shodhsandarsh@rediffmail.com

- Sustainable Fashion / Eco Fashion : Exploring Eco-Friendly Practices In Fashion Designing Industry-Ratnesh Yadav 133-154
- नागार्जुन के काव्य सृजन का वैचारिक पक्ष-प्रेरणा शाहू 155-160
- राष्ट्रीय आंदोलन में मधु कांकरिया के कथा साहित्य की यथार्थता-प्रिया भारती 161-164
- रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय एवं मानवतावादी दृष्टिकोण-नेहा यादव 165-167
- Cyber Financial frauds : A Concern For Indian Financial Inclusion System-Shikha Poddar 168-173
- मधु भण्डारी की आत्मकथा में अभिव्यक्त लेखकीय जीवन-सोनू पाण्डेय एवं डॉ. ओमप्रकाश द्विवेदी 174-178
- प्राचीन भारतीय संस्कृति में आश्रम व्यवस्था की अवधारणा : अर्थ एवं प्रयोजन-डॉ. सुरेन्द्र सिंह 179-183
- वेदांत दर्शन में योग का स्वरूप : एक अध्ययन-कु. दिव्या 184-188
- जनपद मेरठ के खरखौदा विकासखण्ड में जोत आकार एवं कृषि रूपान्तरण का भौगोलिक अध्ययन-डॉ. महीपाल सिंह 189-195
- संताल जनजातीय कला एवं संस्कृति : समकालीन परिदृश्य-डॉ. सिनगो सोरेन 196-201
- गणित में निदानात्मक परीक्षण बैटरी का निर्माण, प्रमापीकरण एवं परीक्षण दिग्दर्शिका तैयार करना-विभय कुमार सोनी एवं डॉ. अंजनी कुमार मिश्र 202-207
- Educational Philosophy of Dr. Babasaheb Ambedkar-Dr. Girja Prasad Mishra 208-211
- Border disputes in North-eastern India-Bipin Kumar 212-218
- Human Rights of Mentally Challenged & Physically Shocede Person India -Prof. (Dr.) Vimlesh Kumar Panday 219-221
- माध्यमिक स्तर पर यू.पी. बोर्ड एवं सी.बी.एस.ई. बोर्ड के शिक्षकों के योग शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन-मनीश कुमार सिंह एवं प्रो. मुन्ना सिंह 222-228
- दिव्यांग एवं सामान्य बालकों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन-डॉ. अनुपमा सिंह 229-236
- स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन-वंदना सिंह 237-241
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यक्तित्व पर उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन-संजय कुमार शर्मा 242-247
- कबीर के काव्य में प्रतिबिम्बित नारी-हेमा सिंह एवं प्रो. आलोक प्रसाद 248-253

* * * * *

गणित में निदानात्मक परीक्षण बैटरी का निर्माण, प्रमापीकरण एवं परीक्षण दिग्दर्शिका तैयार करना

विभव कुमार सोनी* डॉ. अंजनी कुमार मिश्र**

सार-तत्त्व-शोधार्थी द्वारा हिन्दी माध्यम कक्षा 8 गणित विषय में दो प्रकरण : परिमेय संख्याएँ (5 उप-प्रकरण : जोड़, घटाना, गुणा, भाग, शाब्दिक समस्याएँ) तथा वर्ग और वर्गमूल (2 उप-प्रकरण : वर्ग एवं शाब्दिक समस्याएँ, वर्गमूल एवं शाब्दिक समस्याएँ) पर निदानात्मक परीक्षण बैटरी का निर्माण किया गया, जिसमें बहुविकल्पीय प्रश्न, सत्य/असत्य प्रश्न, रिक्त स्थानों की पूर्ति प्रश्न और लघु-उत्तरीय प्रश्न हैं। शोधार्थी ने हिन्दी माध्यम में प्रयुक्त निदानात्मक परीक्षण बैटरी को निदानात्मक परीक्षण बैटरी 'अ' कहा। परीक्षण निर्माण के अन्तर्गत परीक्षण की योजना बनाना, प्रश्नों की रचना करना, प्रश्नों का चयन करना और परीक्षण का मूल्यांकन के समस्त स्तर को पूरा किया गया। निदानात्मक परीक्षण बैटरी 'अ' की विश्वसनीयता परीक्षण-पुनर्परीक्षण विधि द्वारा +0.99, निष्कर्ष वैधता +0.99 और शतांशीय मानक ज्ञात किये गये तत्पश्चात् परीक्षण की दिग्दर्शिका तैयार की गयी, परीक्षण की दिग्दर्शिका के अन्तर्गत परीक्षण की भूमिका, परीक्षण का विवरण, प्रशासन, अंकन, विश्वसनीयता, वैधता और मानक का वर्णन किया गया है।

संकेत शब्द-निदानात्मक परीक्षण, परीक्षण बैटरी।

प्रस्तावना-निदानात्मक परीक्षण के द्वारा विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी कठिनाइयों एवं उनके द्वारा की जाने वाली त्रुटियों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। त्रुटि विद्यार्थी कहाँ करते हैं? किस प्रकार की त्रुटि करते हैं तथा क्यों करते हैं? आदि के जानने का प्रयास किया जाता है और इन सबका पता लगाना ही निदान (Diagnosis) कहलाता है। निदानात्मक परीक्षण, विद्यार्थियों की जाँच करने के उपरान्त उनकी किसी एक या अधिक क्षेत्रों में उसकी विशेषताओं एवं कमियों को व्यक्त करता है। गणित शिक्षण में निदानात्मक परीक्षण द्वारा विषयवस्तु को विभिन्न भागों में बाँट लिया जाता है तथा प्रत्येक प्रकरण या भाग से सम्बन्धित नियमों, सूत्रों, संक्रियाओं आदि को प्रश्न-पत्र में सम्मिलित किया जाता है और इन प्रश्नों को अधिगम क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। गणित शिक्षण में निदानात्मक परीक्षण का विशेष महत्त्व है इसलिए इसको समझना आवश्यक हो जाता है। निदान का कार्य गणित विषय में प्रारम्भिक कक्षाओं से ही प्रारम्भ होना चाहिए और प्रतिदिन निदान और उपचार साथ-साथ चलने चाहिए।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण-ठाकरे, बी.एम. (1980) के अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य निदानात्मक परीक्षण का निर्माण करना है, जिसमें निदानात्मक परीक्षण के मानक कार्य प्रणाली का उपयोग किया गया था। विभिन्न उप-इकाई जिन पर परीक्षण प्रश्न विकसित किये गये, जो इस प्रकार थे- अर्थ को समझना, जोड़ व घटाना, जोड़ और घटाने से सम्बन्धित प्रश्न, गुणा व भाग। शर्मा तथा सरिता (2018) के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सी.बी.एस.ई. द्वारा संचालित विद्यालयों में विज्ञान-विषय हेतु परीक्षण का निर्माण एवं प्रमापीकृत प्रक्रिया में परीक्षण की योजना बनायी गयी, जिसमें परीक्षण के उद्देश्य, वस्तु, प्रश्नों के प्रकार एवं उनके भारांकन आदि को स्पष्ट किया गया, अन्त में विशिष्टीकरण तालिका का निर्माण किया गया, पद-विश्लेषण समंक के पश्चात् 80 प्रश्नों का चयन हुआ।

* शोध छात्र, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर

** असिस्टेंट प्रोफेसर, (शोध निर्देशक) शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर

तालिका : 2-निदानात्मक परीक्षण बैटरी 'अ' के लिए शिक्षण उद्देश्यों में भारांकन

[ISSN : 2319-5908]

क्र. सं.	शिक्षण उद्देश्य	प्रश्नों की संख्या		कुल प्रश्नों की संख्या	अंक	प्रतिशत
		प्रकरण परिमेय संख्याएँ	प्रकरण: वर्ग और वर्गमूल			
1	हान	4	4	8	8	16
2	बोझ	8	6	14	14	28
3	अनुप्रेषण	6	8	14	14	28
4	उत्तर	7	7	14	14	28
योग		25	25	50	50	100

तालिका : 3-निदानात्मक परीक्षण बैटरी 'अ' के लिए उप-प्रकरणों में भारांकन

क्र. सं.	प्रकरण	उप-प्रकरण	कुल प्रश्नों की संख्या	अंक	प्रतिशत
1.	परिमेय संख्याएँ	जोड़	5	5	10
		घटाना	5	5	10
		गुणा	5	5	10
		भाग	5	5	10
		शाब्दिक समस्याएँ	5	5	10
2	वर्ग और वर्गमूल	वर्ग एवं शाब्दिक समस्याएँ	13	13	26
		वर्गमूल एवं शाब्दिक समस्याएँ	12	12	24
		योग	50	50	100

तालिका : 4-निदानात्मक परीक्षण बैटरी 'अ' के लिए विभिन्न प्रकार के पदों में भारांकन

क्र. सं.	प्रश्नों के प्रकार	प्रश्नों की संख्या		कुल प्रश्नों की संख्या	अंक	प्रतिशत
		प्रकरण परिमेय संख्याएँ	प्रकरण: वर्ग और वर्गमूल			
1	बहुविकल्पीय प्रश्न	6	6	12	12	24
2	सत्य/असत्य प्रश्न	7	7	14	14	28
3	रिक्त स्थानों की पूर्ति प्रश्न	7	7	14	14	28
4	लघु उत्तरीय प्रश्न	5	5	10	10	20
योग		25	25	50	50	100

तालिका : 6- निदानात्मक परीक्षण बैटरी 'अ' के लिए प्रश्नों की कठिनाई स्तर में मापकन

क्र. सं.	कठिनाई स्तर	प्रश्नों की संख्या		कुल प्रश्नों की संख्या	अंक	प्रतिशत
		प्रकरण परिचय संख्याएँ	प्रकरण वर्ग और वर्गमूल			
1	बहुत आसान	1	1	2	2	4
2	आसान	7	7	14	14	28
3	औसत	15	15	30	30	60
4	कठिन	2	2	4	4	8
योग		25	25	50	50	100

(ii) प्रश्नों की रचना करना : विशिष्टीकरण तालिका का अनुसरण करके, जितने प्रश्न अंतिम परीक्षण में रखने हैं उसके दो गुने प्रश्नों का निर्माण किया गया।

परिमेय संख्याएँ : प्रश्न संख्या 1 से 50 तथा वर्ग और वर्गमूल : प्रश्न संख्या 51 से 100

(iii) प्रश्नों का चयन करना :

(क) प्रारम्भिक जाँच स्तर : विषय-विशेषज्ञों, शिक्षाशास्त्रियों और विद्यार्थियों द्वारा दिये गये सुझावों के अनुसार कुल 20 प्रश्न को निदानात्मक परीक्षण बैटरी 'अ' प्रारम्भिक प्रारूप से निरस्त कर दिया गया क्योंकि इनके निर्माण में त्रुटियाँ पायी गयी।

(ख) वास्तविक जाँच स्तर : यह परीक्षण प्रारम्भिक अवस्था में 60 विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया और इस परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांकों को अवरोही क्रम में व्यवस्थित किया गया। 27 प्रतिशत उच्च समूह प्राप्तांक विद्यार्थी (अर्थात् 16 विद्यार्थी) तथा 27 प्रतिशत निम्न समूह प्राप्तांक विद्यार्थी (अर्थात् 16 विद्यार्थी) के प्राप्तांकों को लेकर पद विश्लेषण समंक तालिका तैयार किया गया, तदुपरान्त प्रत्येक प्रश्न के लिए कठिनाई स्तर और विभेदन क्षमता को प्राप्त किया गया तत्सम्बन्धित प्रश्न के स्वीकृत, संशोधन एवं निरस्त करने का निर्णय लिया गया। अन्त में शोधार्थी ने विशिष्टीकरण तालिका का अनुसरण करते हुए निर्धारित स्वीकृत प्रश्नों को अंतिम प्रारूप में रखा।

(iv) परीक्षण का मूल्यांकन करना : निदानात्मक परीक्षण बैटरी 'अ' का अन्तिम प्रारूप निश्चित किया गया।

विश्वसनीयता : परीक्षण पुनर्परीक्षण विधि द्वारा विश्वसनीयता गुणांक + 0.99

वैधता : परीक्षण की निष्कर्ष वैधता + 0.99

मानक : शतांशीय मानक

परीक्षण दिग्दर्शिका

भूमिका : निदान (Diagnosis) शब्द का प्रयोग चिकित्सा विज्ञान में रोगी के ईलाज से पूर्व उसकी बीमारी का पता लगाने के लिए किया जाता है, इसके अन्तर्गत चिकित्सक यह जानकारी प्राप्त करता है कि रोगी को कौन-सी, कितनी या किस प्रकार की बीमारी है? यह जानने के पश्चात् चिकित्सक उस बीमारी का उपचार करता है। ठीक उसी प्रकार निदानात्मक परीक्षण के द्वारा विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी कठिनाइयों एवं उनके द्वारा की जाने वाली त्रुटियों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। त्रुटि विद्यार्थी कहाँ करते हैं? किस प्रकार की त्रुटि करते हैं तथा क्यों करते हैं? आदि के जानने का प्रयास किया जाता है और इन सबका पता लगाना ही निदान (Diagnosis) कहलाता है। निदानात्मक परीक्षण विद्यार्थियों की जाँच के उपरान्त उनकी किसी एक या अधिक क्षेत्रों में विशेषताओं एवं कमियों को व्यक्त करता है। गणित शिक्षण में निदानात्मक परीक्षण द्वारा विषय-वस्तु को विभिन्न भागों में बाँट लिया जाता है तथा प्रत्येक प्रकरण या भाग से सम्बन्धित नियमों, सूत्रों, सक्रियाओं आदि को प्रश्न-पत्र में सम्मिलित किया जाता है और इन प्रश्नों को अधिगम क्रम में व्यवस्थित किया जाता है।

ईबेल (Ebel) के शब्दों में : "निदानात्मक परीक्षण को अध्ययन के किसी विषय, जैसे पढ़ना या अकर्मण्य के अधिगम करने में आई विशिष्ट कमजोरियों या असफलताओं को सामने लाने के लिए बनाया जाता है।"

निष्कर्षात् निदानात्मक परीक्षण से प्राप्त गुण-सूची व विद्यार्थी निष्कर्षण से निष्कर्षित की गई होगी (निष्कर्षण विधियाँ/Methods) में परिवर्तन करने के उपरान्त यह शिक्षण विद्या जा सकता है।

परीक्षण का विवरण : प्रस्तुत परीक्षण कक्षा 8 व शिक्षार्थियों व शैक्षिक शैक्षणिक दृष्टिकोण से प्रारम्भिक स्तर में किया गया है। यह परीक्षण बालक और बालिका दोनों समूह के लिए उपयुक्त है।

प्रारम्भिक प्रारूप में परीक्षण में 100 प्रश्न थे। प्रकरण परिमेय संख्याएँ (5 उप-प्रकरण : जोड़, घटाना, गुणा, भाग, शाब्दिक समस्याएँ) जो प्रश्न संख्या 1 से 50 तक और प्रकरण : वर्ग और वर्गमूल (2 उप-प्रकरण : वर्ग और वर्गमूल) जो प्रश्न संख्या 51 से 100 तक है। परीक्षण में प्रश्न व प्रश्न-पत्रों को शिक्षाशास्त्रियों और विद्यार्थियों द्वारा दिये गये सुझावों के अनुसार कुल 20 प्रश्न (10 प्रश्न परिमेय संख्याएँ, 10 प्रश्न वर्ग और वर्गमूल) को प्रश्न-पत्र के प्रारम्भिक प्रारूप से निरस्त कर दिया गया क्योंकि इनके निर्माण में त्रुटियाँ पायी गयीं। तत्पश्चात् 60 विद्यार्थियों पर यह परीक्षण प्रशासित किया गया और इस परीक्षण में प्राप्त प्राप्तांकों को अवरोही क्रम में व्यवस्थित किया गया। 27 प्रतिशत उच्च समूह प्राप्तांक विद्यार्थी (अर्थात् 16 विद्यार्थी), तथा 27 प्रतिशत निम्न समूह प्राप्तांक विद्यार्थी (अर्थात् 16 विद्यार्थी) के प्राप्तांकों को लेकर पद विश्लेषण मन्द तालिका तैयार किया गया, तदुपरान्त प्रत्येक प्रश्न के कठिनाई स्तर और विवेचन क्षमता को प्राप्त किया गया तत्सम्बन्धित प्रश्न के स्वीकृत, संशोधन एवं निरस्त करने का निर्णय लिया गया।

परिष्कृत पद विश्लेषण तालिका में 34.375 प्रतिशत से 62.5 प्रतिशत तक कठिनाई स्तर के प्रश्न और 0.3125 से 0.5625 तक विवेचन क्षमता के प्रश्न रखे गये। अन्तिम प्रारूप में परीक्षण में 50 प्रश्न हैं।

प्रकरण : परिमेय संख्याएँ (5 उप-प्रकरण : जोड़, घटाना, गुणा, भाग, शाब्दिक समस्याएँ) जो प्रश्न संख्या 1 से 25 तक और प्रकरण : वर्ग और वर्गमूल (2 उप-प्रकरण : वर्ग एवं शाब्दिक समस्याएँ, वर्ग एवं शाब्दिक समस्याएँ) जो प्रश्न संख्या 26 से 50 तक है।

प्रशासन- सर्वप्रथम विद्यार्थियों से बातकर आत्मीयता स्थापित किया जाता है। परीक्षण हेतु सम्पूर्ण समय 2 घण्टा 30 मिनट निर्धारित किया गया है। सर्वप्रथम परिमेय संख्याएँ से सम्बन्धित प्रश्न-पत्र को विद्यार्थियों पर प्रशासित किया जाता है, जिसका निर्धारित समय 1 घण्टा 15 मिनट है। 1 घण्टा पश्चात् समय बताया जाता है और तत्पश्चात् 15 मिनट बाद उत्तर-पुस्तिका बच्चों से ले ली जाती है। पुनः वर्ग और वर्गमूल से सम्बन्धित प्रश्न-पत्र को विद्यार्थियों पर प्रशासित किया जाता है जिसका निर्धारित समय 1 घण्टा 15 मिनट है। 1 घण्टा पश्चात् समय बताया जाता है और तत्पश्चात् 15 मिनट बाद उत्तर-पुस्तिका बच्चों से ले ली जाती है।

प्रत्येक परीक्षण के शुरु में अतिरिक्त 15 मिनट उत्तर-पुस्तिका में दिये आवश्यक जानकारी (उम्र, नाम, कक्षा, विषय, दिन, दिनांक, पिता का नाम आदि) को लिखने और प्रश्न-पुस्तिका को पढ़ने के लिए दिया गया यदि आवश्यकता पड़े तो प्रत्येक प्रश्न के उद्देश्य को भी स्पष्ट किया जा सकता है।

यह परीक्षण एक शाब्दिक शैक्षिक नैदानिक उपलब्धि परीक्षण है जो विद्यार्थियों पर व्यक्तिगत रूप में अथवा सामूहिक रूप में प्रशासित किया जा सकता है।

अंकन : परीक्षण बैटरी के अंकन हेतु अंकन-कुंजी का प्रयोग किया गया, जो विषय-विशेषज्ञों एवं शिक्षाशास्त्रियों द्वारा प्रमाणित है। कुल सही उत्तरों का योग ही विद्यार्थी का व्यक्तिगत प्राप्तांक है।

विश्वसनीयता : परीक्षण बैटरी को सर्वप्रथम 60 विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया तत्पश्चात् दस दिन उपरान्त पुनः इन्हीं 60 विद्यार्थियों पर इसी परीक्षण को प्रशासित किया गया। इस प्रकार प्रत्येक विद्यार्थी के दो प्राप्तांक प्राप्त हो गये। परीक्षण के प्रथम व द्वितीय प्रशासन से प्राप्त अंकों के बीच सहसम्बन्ध गुणांक की गणना की गयी जो 0.99 प्राप्त हुआ। अर्थात् परीक्षण पुनर्परीक्षण विधि द्वारा विश्वसनीयता गुणांक 0.99 प्राप्त हुआ, जो धनात्मकता प्रदर्शित करता है।

वैधता : परीक्षण बैटरी की वैधता हेतु डॉ० (श्रीमती) मधु अस्थाना, (प्राचार्या, अग्रसेन कन्या पी०जी० कालेज, वाराणसी), डॉ० (श्रीमती) किरन बाला वर्मा (विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, हरिश्चन्द्र पी०जी० कालेज, वाराणसी), डॉ० (श्रीमती) किरन बाला वर्मा (विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, हरिश्चन्द्र पी०जी० कालेज, वाराणसी) द्वारा प्रकाशित वाचिक बुद्धि परीक्षण (हिन्दी में) का प्रयोग किया गया है, जिसमें 100 प्रश्न हैं।

जो बुद्धि मापन के ज्ञात क्षेत्र सर्वश्रेष्ठ उत्तर, शब्द-अर्थ, विपरीत शब्द, समरूपता, वर्गीकरण, रिजनिंग, गणितीय गूढ़ता और गणितीय निर्देश से सम्बन्धित है। परीक्षण के प्रशासन हेतु 20 मिनट निर्धारित किये गये हैं और अंकन हेतु पूर्व निर्धारित अंकन-कुंजी भी उपलब्ध है।

परीक्षण बैटरी को सर्वप्रथम 60 विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया, तत्पश्चात् पुनः इन्हीं 60 विद्यार्थियों पर उपर्युक्त बुद्धि परीक्षण वाचिक बुद्धि परीक्षण (हिन्दी में) को प्रशासित किया गया। इस प्रकार प्रत्येक विद्यार्थी के दो प्राप्तांक प्राप्त हो गये। परीक्षण के प्रथम व द्वितीय प्रशासन से प्राप्त अंकों के बीच सह सम्बन्ध गुणांक की गणना की गयी, जो 0.99 प्राप्त हुआ अर्थात् परीक्षण की निकष वैधता (आनुभाषिक वैधता) गुणांक गुणनफल आधुनिक सहसम्बन्ध द्विदि से 0.99 प्राप्त हुआ, जो धनात्मकता प्रदर्शित करता है।

मानक : परीक्षण बैटरी हेतु शतांशीय मानक का उपयोग किया गया है।

निदानात्मक परीक्षण बैटरी 'अ' के लिए शतांशीय मानक

शतांश	प्राप्तांक
90	37
80	34
70	32
60	32
50	31
40	29
30	25
20	21
10	19
कुल विद्यार्थी	60
मध्यमान	28.67
मानक विचलन	7.05

शैक्षिक निहितार्थ :

1. विद्यार्थी विषय-वस्तु के अतिसूक्ष्मतम तत्वों को भी आसानी से समझ सकेंगे और उनकी प्रतिभा का सर्वांगीण विकास होगा, जिससे निदानात्मक परीक्षण की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है।
2. आज के परिवेश में आ रहे शिक्षा के स्तर के गिरावट को कम किया जा सकता है।
3. शैक्षणिक विषय का एक कठिन विषय के रूप में देखने का दृष्टिकोण समाप्त होगा और अनिवार्य पाठ्यक्रम में सहित बना रहेगा, जिससे विद्यार्थियों का मानसिक विकास तीव्र गति से सम्भव हो सकेगा।

सन्दर्भ-सूची

1. अग्रथाना, मधु तथा वर्मा, किरन बाला, दिग्दर्शिका वाचिका बुद्धि परीक्षण (हिन्दी में), वाराणसी : रूपा साइकोलॉजिकल सण्टर।
2. गुप्ता, एस.पी. तथा गुप्ता, अलका (2012), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
3. जोगी, माहनचन्द्र, सामान्य मानसिक योग्यता (बुद्धि) परीक्षा का परीक्षण-विधि एवं मानक, वाराणसी : रूपा साइकोलॉजिकल सण्टर।
4. शर्मा, आर.ए. (2015), शिक्षा अनुसंधान के मूलतत्व एवं शोध प्रक्रिया, मेरठ : आर. लाल बुक डिपो।

* * * * *